



Item Code:

641

Participant Code:

102

थकी वेशिपन हवस बने  
तब खुद पर इक फरियाद करो,  
अपनी माता और बहन का  
अपने मन में थाद करो ।

मुझे जो कहना था,  
बेटी हूँ, इसलिए मुझे  
श्रुण में मत मारो ।  
किसी भी नारी का दुहेज के  
लालन में मत दुखवारी ।

हाँ ! मुझे जो कहना था,  
हर मुडिया को फुसलाने वाला  
ना शैलान मिले ।  
हासी नीयत हो जिसकी,  
फांसी का अनुदान मिले ।

मुझसे ही नर जाया,  
फिर भी मैंने क्या पाया ?

मैं बेटी हूँ, ~~बेटी~~ हूँ  
मैं ही हूँ प्यार बहन का,  
माँ की आँखन का छाया हूँ ।

मुझे जो कहना था,  
मैं खुद पर इतनी पावन हूँ,  
जितनी माँ गंगा गीवा है ।